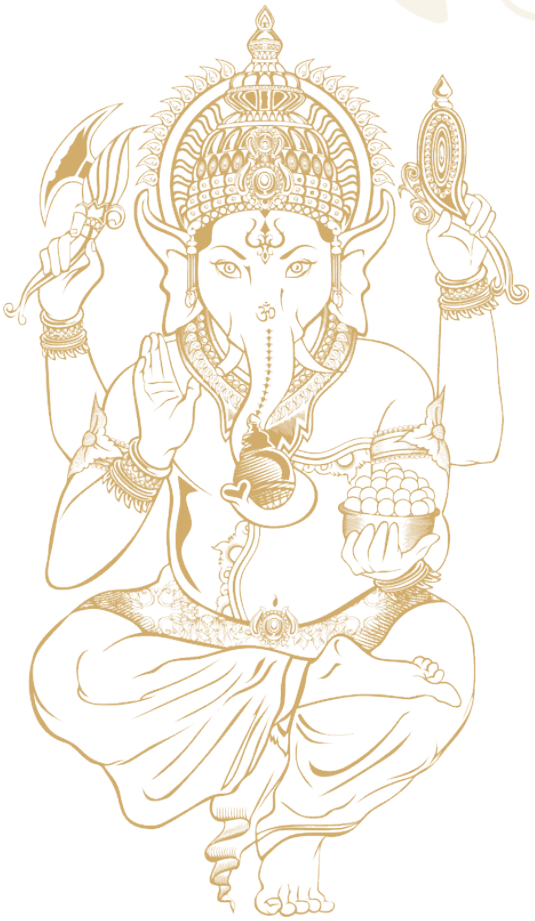

Mr.Navneet Khanduri

26 Aug 1997

12:44 PM

Mumbai

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119870501**

तिथि 26/08/1997 **समय** 12:44:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Mumbai **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:49:25
अक्षांश 18:58:00 उत्तर **रेखांश** 72:50:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:38:40 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	10:23:39 घं
वेलान्तर	00:01:50 घं
सूर्योदय	06:22:31 घं
सूर्यास्त	18:58:02 घं
चैत्रादि संवत	2054
शक संवत	1919
मास	भाद्रपद
पक्ष	कृष्ण
तिथि	9
नक्षत्र	मृगशिरा
योग	हर्षण
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	सर्प
नाड़ी	मध्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	वे-वेद
पाया(रा.-न.)	ताम्र-स्वर्ण
होरा	गुरु
चौघड़िया	अमृत

विंशोत्तरी

मंगल 6वर्ष 8मा 7दि

गुरु

04/05/2022
04/05/2038

गुरु	21/06/2024
शनि	03/01/2027
बुध	10/04/2029
केतु	17/03/2030
शुक्र	15/11/2032
सूर्य	03/09/2033
चन्द्र	03/01/2035
मंगल	10/12/2035
राहु	04/05/2038

योगिनी

संकटा 7वर्ष 7मा 21दि

उल्का

17/04/2020
18/04/2026

उल्का	18/04/2021
सिद्धा	18/06/2022
संकटा	18/10/2023
मंगला	18/12/2023
पिंगला	17/04/2024
धान्या	17/10/2024
भ्रामरी	18/06/2025
भद्रिका	18/04/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			06:55:52	वृश्चि	अनुराधा	2	शनि	बुध	---	0:00			
सूर्य			09:16:01	सिंह	मघा	3	केतु	गुरु	मूलत्रिकोण	2.09	कलत्र	पितृ	साधक
चंद्र			23:55:41	वृष	मृगशिरा	1	मंगल	मंगल	मूलत्रिकोण	1.23	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल			13:39:21	तुला	स्वाति	3	राहु	बुध	सम राशि	1.10	ज्ञाति	भ्रातृ	सम्पत
बुध	व	अ	19:02:32	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	राहु	मित्र राशि	1.13	मातृ	ज्ञाति	वध
गुरु	व		21:03:57	मक	श्रवण	4	चंद्र	शुक्र	नीच राशि	1.01	भ्रातृ	धन	अतिमित्र
शुक्र			16:28:49	कन्या	हस्त	2	चंद्र	शनि	नीच राशि	1.12	पुत्र	कलत्र	अतिमित्र
शनि	व		26:01:35	मीन	रेवती	3	बुध	राहु	सम राशि	0.99	आत्मा	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		26:02:47	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	केतु	शत्रु राशि		---	ज्ञान	वध
केतु	व		26:02:47	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	केतु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

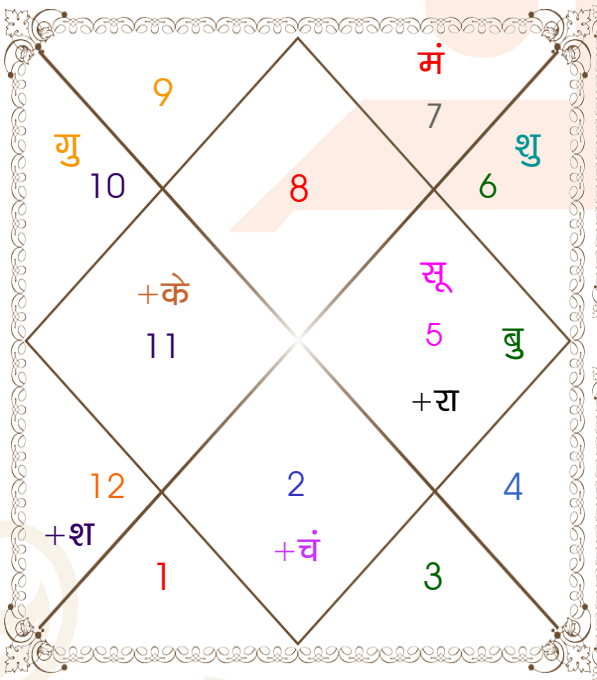

चन्द्र कुंडली

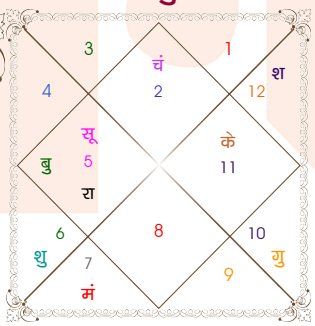

नवमांश कुंडली

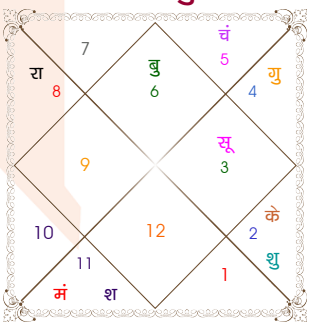

सर्वाष्टकवर्ग

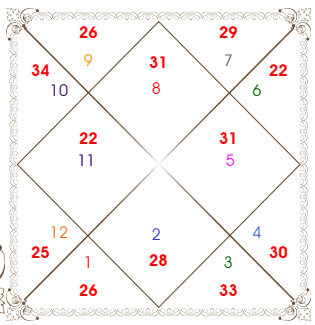

दशमांश कुंडली

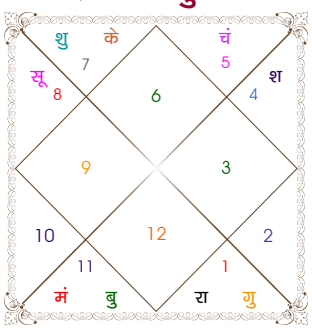

नक्षत्रफल

आपका जन्म मृगशिरा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण वैश्य, वर्ग मूषक, नाड़ी मध्य, गण देव तथा योनि सर्प होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम का आद्याअक्षर "वे" अक्षर से प्रारम्भ होगा। यथा- वेलीराम, बेअन्त सिँह इत्यादि।

आप स्वभाव से ही चतुर एवं चंचल होंगे। तथा जो भी कार्य करेंगे चतुराई से करेंगे। संयम तथा धैर्य का पालन करना आपका गुण होगा लेकिन आप अच्छे कार्य कम ही करेंगे। अधिकांश आप क्रूर एवं कठोर कार्य करेंगे। आपके मन में यदा कदा अहंकार की मात्रा अत्यधिक होगी जिसके कारण आप अपने समक्ष किसी अन्य को कोई भी महत्व प्रदान नहीं करेंगे।

चतुरश्चपलो धीरः क्रूरकर्मा क्षुधातुरः।
अहंकारी परद्वेषी मृगशीर्णि भवेन्नरः।।
जातकदीपिका

अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र में उत्पन्न जातक चतुर चंचल धैर्यवान, क्रूरकर्म करने वाला, भूख से व्याकुल, अहंकारी तथा अन्य जनों से द्वेष करने वाला होता है।

आप नकली वस्तुओं के बनाने के कार्य में सिद्धहस्त हो सकते हैं। साथ ही आपकी कार्यशैली भी स्वयं पर केन्द्रित रहेगी तथा अपनी बुद्धि तथा योग्यता के अनुसार कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे।

चपलश्चतुरो धीरः कूटकर्मस्वकर्मकृत।
अहंकारी परद्वेषी मृगे भवति मानवः।।
मानसागर

अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र का जातक चंचल, चतुर, धैर्यवान, नकली वस्तु बनाने वाला, स्वार्थी, अहंकारी और द्वेषी होता है।

नैसर्गिक रूप से आप डरपोक रहेंगे। भय आपके अन्दर हमेशा व्याप्त रहेगा। आप चतुर एवं विद्वान भी होंगे तथा उत्साह से आप हमेशा सम्पन्न रहेंगे। धन एवं ऐश्वर्य का आपके पास अभाव नहीं रहेगा एवं इससे आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे।

चपलश्चतुरोभीरुः पटुरुत्साही धनी मृगे भोगी।
बृहज्जातकम्

अर्थात मृगशिरा नक्षत्रोत्पन्न व्यक्ति चंचल, चतुर, डरपोक, विद्वान, उत्साही धन, वैभव तथा ऐश्वर्य को भोगने वाला होता है।

अस्त्र शस्त्र चलाने की विद्या में आप निपुण हो सकते हैं। साथ ही प्रत्येक प्रकार के

अस्त्र शस्त्र के विषय में आपको विषद ज्ञान रहेगा। आपका स्वभाव विनय से परिपूर्ण रहेगा तथा सबसे नम्रता का व्यवहार करेंगे। आप गुणों का सम्मान करने वाले व्यक्ति होंगे तथा गुणवान व्यक्तियों का श्रद्धापूर्वक सम्मान करेंगे तथा उनसे आपका विशेष अनुराग रहेगा। सर्व प्रकार की भौतिक संपदा तथा सुखों का आप उपभोग करने वाले होंगे। आपकी प्रवृति भी विलासी होगी। उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग या मंत्री वर्ग के आप प्रिय होंगे। उनसे आपको उचित सम्मान तथा सहयोग मिलेगा। आप सत्य के या अच्छे मार्ग पर चलने के लिए आजीवन प्रयत्नशील रहेंगे।

शरासनाभ्यासरतो विनीतः सदानुरक्तो गुणिनां गणेषु।
भोक्तानृपस्नेहभरेण पूर्णः सन्मार्गवृतो मृगजात जन्मा।
जातकाभरणम्

अर्थात मृगशिरा नक्षत्र का मानव अस्त्र शस्त्र विद्या में पारंगत, नम्र, गुणों का आदर करने वाला, विलासी राजा का प्रिय और सन्मार्गगामी होता है।

आपका हृदय शान्त रहेगा तथा आप इधर उधर घूमने फिरने या यात्रा करने के शौकीन रहेंगे। फलतः आपका अधिकांश समय यात्रा या भ्रमण में ही व्यतीत होगा।

चान्द्रे सौम्यमनोळटनः कुटिलदृक् कामातुरो रोगवान।
जातकपरिजातः

अर्थात मृगशिरा में उत्पन्न जातक सौम्यचित्त वाला घूमने फिरने या यात्रा करने वाला, कुटिल दृष्टि युक्त, कामपीड़ित तथा रोगी होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ हैं। आप जीवन में धन धान्य से पूर्ण रूपेण सम्पन्न रहेंगे तथा श्रेष्ठ एवं गुणवान स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों तथा सोना चांदी आदि मूल्यवान धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगे। देखने में आप का शरीर सुन्दर एवं स्वस्थ रहेगा। आप एक विद्वान पुरुष रहेंगे तथा चल अचल सम्पत्ति से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक विभिन्न सुखसंसाधनों का आप नित्य उपभोग करते रहेंगे। आपकी सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी तथा आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त ही सुख से व्यतीत होगा। आपका अन्य लोग से मधुर एवं सुशील व्यवहार रहेगा।

आप वृष राशि में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपका वर्ण लालिमायुक्त गौरवर्ण तथा गाल स्थूलता लिए हुए होंगे। आपके नेत्र बड़े तथा मोटे होंगे। स्वाभाविक रूप से आलस्य का भी आपमें समावेश रहेगा। उत्तम कुल उत्पन्न लोगों के प्रति आपके अन्तर्मन में सेवा तथा श्रद्धा का भाव व्याप्त रहेगा। गुरू तथा ब्राहमण वर्ग के भी आप आज्ञाकारी होंगे तथा श्रद्धा पूर्वक उनके आदेशों का पालन करेंगे। प्रकृति आपकी वात तथा कफ मिश्रित होगी। बुद्धिमता से युक्त होकर आप आजीवन सुख से रहेंगे तथा दानशीलता का स्वभाव भी रहेगा। साथ ही बाल भी आपके घुँघराले होंगे।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।

कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरुजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

आप आजीवन विभिन्न प्रकार के भौतिक सुखों का उपयोग करेंगे। दानशीलता भी आपकी स्वाभाविक प्रवृति होगी तथा यत्न पूर्वक आप इसका पालन करते रहेंगे। आप शुद्धता तथा सफाई के प्रति विशेष रूप से सजग रहेंगे। अपने समस्त कार्यों को आप दक्षतापूर्ण तरीके से सम्पन्न करने में समर्थ होंगे। आप बलवान तथा विलासी प्रवृति वाले भी होंगे। धनार्जन आपके पास प्रचुर मात्रा में होगा। अतः भौतिक सुख साधनों तथा विलास युक्त वस्तुओं पर आप पूर्ण रूपेण उन्मुक्त भाव से व्यय करेंगे। तेजस्विता से भी आप युक्त रहेंगे तथा आपका आचरण भी उत्तम होगा। आपके मित्र सदगुणों से युक्त रहेंगे तथा मित्रता संबध दीर्घकाल तक स्थाई रहेंगे।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपके मुख एवं जानु का आकार दीर्घ होगा। आपके जीवन के प्रथम दो भाग सामान्य रूप से कष्टदायक रहेंगे। परन्तु अन्तिम दो भाग सामान्यता सुख पूर्वक व्यतीत होंगे। स्त्री वर्ग से आपका विशेष आकर्षण रहेगा। आप त्यागी तथा क्षमाशीलता के गुणों से सुशोभित रहेंगे। प्रारम्भिक अवस्था में आपको दुःख तथा कष्ट उठाने पड़ेंगे तथा परिश्रम भी अधिक ही करना पड़ेगा। आपके मुख पीठ तथा बगल में तिल मस्सा तथा व्रणादि के चिन्ह हो सकते हैं।

पृथूरुवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

आपकी सन्तति में कन्याओं की संख्या अधिक रहेगी। आप अपने उत्तम आचरण तथा व्यवहार के कारण प्रशंसा के पात्र होंगे। धन तथा ऐश्वर्य का उपभोग करते हुए आपकी कीर्ति चारों तरफ फैली रहेगी।

दाताकान्त यशोधनोरुचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आप विशाल वक्षस्थल से युक्त रहेंगे तथा बाल भी आपके घने तथा घुँघराले होंगे। आपकी प्रवृति न्याय प्रिय होगी तथा गलत सही का निर्णय करने में आप सक्षम रहेंगे। आपकी चाल मनमोहक तथा शरीर के सर्वांग दीर्घ तथा सम्पूर्णता से युक्त रहेंगे।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आप धीरे धीरे चलना पसन्द करेंगे। अपने कार्यों को आप बुद्धिमता तथा चतुराई से सम्पन्न करेंगे। आप अन्य जनों का उपकार करने की इच्छा करेंगे। इस प्रकार अपने अच्छे तथा पुण्य के कार्यों से जीवन में सुखी रहेंगे।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

आपकी मुखाकृति दीर्घ तथा रूप दर्शनीय होगा। कष्ट सहने में आप सक्षम होंगे तथा आप सविलास गमन प्रिय व्यक्ति होंगे। आप उच्चाधिकार प्राप्त कोई भी गणमान्य व्यक्ति हो सकते हैं। आपके पेट में जठराग्नि की प्रबलता रहेगी तथा युवावस्था एवं वृद्धावस्था में सुख प्राप्त करेंगे। आप स्त्री प्रिय तथा दीर्घ काल तक मित्रता वाले रहेंगे। इसके अतिक्ति आप सुन्दर स्वभाव से युक्त तथा भगवान विष्णु तथा शिव की अर्चना करने वाले होंगे।

कान्तः खेलगतिः पृथूरूवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी मधुर एवं श्रेष्ठ होगी। आप प्रायः सत्य ही बोलेंगे तथा सत्य का ही अनुशरण करेंगे। आपकी बुद्धि सादगी से युक्त होगी आप किसी भी बात को बड़ी सुगमता से ग्रहण करने की क्षमता रखेंगे तथा सुगमता से ही अपने विचारों को प्रकट करने में कुशल होंगे। आपको सात्विक एवं अल्प मात्रा में भोजन करना रूचिकर लगेगा। गुणों के आप पूर्ण रूप से जानने वाले होंगे तथा महान एवं विद्वानों द्वारा प्रतिपादित सद्गुणों से आप युक्त होंगे। भौतिक सुख साधनों का आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा आपका जीवन सुख एवं शान्ति से व्यतीत होगा।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

देखने में आपका शरीर स्वस्थ और सुन्दर होगा। दान देना आपकी स्वाभाविक प्रवृति होगी तथा जरूरत मन्द लोगों तथा संस्थाओं को आप श्रद्धापूर्वक दान करेंगे। आप अत्यन्त सरलहृदय के होंगे तथा छल कपट एवं प्रयत्नों से दूर रहेंगे। समाज में आप श्रेष्ठ विद्वान के रूप में जाने जाएंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

सर्प योनि में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी क्रोध का भी प्रदर्शन करेंगे। आप चंचल प्रवृति के होंगे तथा कार्यो को चपलता पूर्वक ही सम्पन्न करेंगे। जिसके इच्छित परिणाम कभी कभी ही प्राप्त होंगे। जिह्वा से भी आप चपलता का प्रदर्शन करेंगे अर्थात् खट्टी, मीठी, तीखी स्वाद वाली वस्तुएं आपको प्रिय लगेंगी।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप

जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

मार्ग शीर्ष मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग, शकुनि करण, शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि में स्थित चन्द्रमा यह समय आपके लिए अनिष्ट फल देने वाला है। अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य पंचमी, दशमी, पौर्णमासी एवं अमावस्यां तिथियां, हस्त नक्षत्र सुकर्मा योग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभकार्य, व्यापार प्रारम्भ नवगृह निर्माण, क्रय विक्रय, लेन-देन आदि कार्य सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही अधिक होगी। साथ ही शनिवार चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा में भी शुभ कार्य आरम्भ न करें तथा इन दिनों तथा समय पर शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

यदि समय आपके अनुकूल न हो आपको मानसिक अशान्ति या शारीरिक अस्वस्थता प्रतीत हो रही हो तो ऐसे समय पर आपको नियमित रूप से शुक्रवार के व्रत रखने चाहिए तथा श्वेत मोती, श्वेत वस्त्र, चावल, शहद, कपूर, श्वेत पुष्प इत्यादि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक दान करना करना चाहिए। इससे आपके अशुभ फलों में न्यूनता आएगी तथा आपको राहत महसूस होगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20 हजार जप कराने से भी लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। श्रद्धानुसार आप अपने इष्ट के रूप में भगवान विष्णु या शिव की भी आराधना कर सकते हैं।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुकाय नमः।